फरीदाबाद

# मजदूर समाचार

दुनियां को बदलने के लिए मजदूरों को खुद को बदलना होगा

नई सीरीज नम्बर 73 जुलाई 1994

**इस अंक में**



## सम्पूर्ण विनाश निर्मम प्रोडक्शन सम्पूर्ण कन्ट्रोल

एटम बमों के निर्माण में अग्रणी अमरीका सरकार एटमी किरणों पर रिसर्च के दौरान 1944 से अमरीकी नागरिकों पर गुप्त प्रयोग कर रही है। विख्यात विश्वविद्यालयों-प्रयोगशालाओं में नामी वैज्ञानिकों, डॉक्टरों और इंजिनियरों द्वारा निर्देशित इस रिसर्च में :

- 800 गर्भवती महिलाओं को एटमी किरणों वाला लोहा खुराक में दिया गया। पैदा हुये बच्चों में कैन्सर की दर ज्यादा पाई गई।
- अन्य लोगों के साथ ही नवजात शिशुओं को एटमी किरणों वाले प्लूटोनियम और आयोडीन के इंजेक्शन दिये गये।
- मन्दबुद्धि करार दिये गये छात्रों को यह कह कर कि वे साइन्स कल्ब के सदस्य बन रहे हैं और माता-पिता को यह कह कर कि उनके बच्चों को विशेष खुराक दी जा रही है, 123 बच्चों को एटमी किरणों वाला दूध पिलाया गया।
- जेल में बन्द स्वस्थ कैदियों के गुप्तांगों पर एटमी किरणों को आजमाया गया।
- विभिन्न अस्पतालों से ला कर 200 मरीजों को एटमी हथियार प्रयोगशाला में निर्मित एक ऐसे विशेष कमरे में रखा गया जो कि एटमी किरणों के समुद्र के समान था।
- इलाज के नाम पर कैन्सर के मरीजों पर सीसियम और कोबाल्ट की एटमी किरणें अत्याधिक मात्रा में इस्तेमाल की गई।
- जानबूझकर एटमी किरणों वाला मैटेरियल हवाईजहाजों से आबादीवाले क्षेत्रों पर छोड़ा गया।

यह सब प्रयोग अमरीका सरकार ने अपने नागरिकों पर किये हैं। अमरीका सरकार और उसके महान वैज्ञानिकों-डॉक्टरों-इंजिनियरों ने यह एक्सपेरीमेन्ट अमरीका सरकार के नागरिकों पर उनसे छिपा कर अथवा उन्हें धोखे में रख कर किये। यूं सरकारें और वैज्ञानिक-डॉक्टर नैतिकता के नाम पर हिटलर के दौर में जर्मनी में किये गये ऐसे ही प्रयोगों की खूब भर्त्सना करते हैं लेकिन हर देश की सरकार अपने नागरिकों पर ऐसे प्रयोग करती है। यह प्रयोग तथा इनके नतीजे गुप्त होते हैं इसलिये सरकारों द्वारा भारी मात्रा में किये जाते ऐसे काम की बहुत थोड़ी जानकारी ही कभी-कभार ही अखबारों में आती है।

**साइन्स-टेक्नोलॉजी का एक पाया विनाश के लिये हथियारों के निर्माण का काम है। साइन्स -टेक्नोलॉजी का दूसरा पाया ऐसी नई-नई मशीनरी का निर्माण करना है जो मजदूरों से अधिक से अधिक काम ले सके और वरकरों पर कन्ट्रोल को कसती जाये।**

नियन्त्रण को पुख्ता करने की आवश्यकता ने सामाजिक विज्ञान-समाज शास्त्र नाम की साइन्स-टेक्नोलॉजी की एक नई शाखा को जन्म दिया है। इस विज्ञान के सार के लिये : नीति निर्धारकों के लिये कोस्टा रिका में नागरिकों का बहुत शान्त स्वभाव के होना एक समस्या थी! शान्त स्वभाव की जड़ जानने और कोस्टा रिका के नागरिकों को हिंसक बनाने के उपाय सुझाने के वास्ते सामाजिक वैज्ञानिकों को काम पर लगाया गया। भारी रिसर्च फन्ड से लैस नामी प्रोफेसरों ने असिस्टैन्टों को काम में जुटा दिया। समाज शास्त्रियों ने कोस्टा रिका में लोगों के शान्त व्यवहार का कारण वहां बच्चों के खिलौनों को बताया जो कि शान्ति की प्रवृति पैदा करते थे। वहां के लोगों को हिंसक बनाने के लिये ज्ञानियों-विज्ञानियों ने कोस्टा रिका में बच्चों को तोप-बन्दूक वाले खिलौने देने की सिफारिश की।

ज्ञान-विज्ञान मंडी के लिये उत्पादन का ईश्वर-अल्लाह है। आँकड़े, तर्क और दलील इस देवता के बौद्धिक अस्त-शस्त्र हैं।

भारत सरकार के लिये अग्नि-पृथ्वी-नाग मिसाइलें बनाने में जुटे आठ हजार वैज्ञानिकों-इंजिनियरों के काम का तालियों से स्वागत करना चाहिये या उनके काम का आलोचनात्मक विश्लेषण होना चाहिये?

## जागृति ज्वाला

27 अप्रैल को बम्बई में महाराष्ट्र सरकार के मंत्रियों के बँगलों पर दो हजार महिला मजदूरों ने हल्ला बोला। नारे लगाती महिला मजदूर पुलिस की लाठियाँ झेलते हुये मुख्यमंत्री और पाँच अन्य मंत्रियों की कोठियों में घुस गई। मार-पीट कर पुलिस ने एक हजार पाँच सौ छत्तीस महिला मजदूरों और पचास पुरूषों को गिरफ्तार किया। जज ने तीन मई तक के लिये गिरफ्तार मजदूरों को पूना और नासिक की जेलों में भेज दिया।

देश के लिये एक्सपोर्ट जरूरी है और देश हित में अधिकाधिक एक्सपोर्ट के वास्ते दुनियाँ-भर में सरकारें मैनेजमेंटों को विशेष प्रोत्साहन देती हैं। भारत सरकार ने इस सन्दर्भ में स्पेशल एक्सपोर्ट जोन बनाये हैं। ऊँची दीवारों से घिरी 100 एकड़ में फैली "सीप्झ" नाम की ऐसी एक जोन बम्बई में है।

विश्व मंडी में जगह बनाना एक्सपोर्ट के लिये जरूरी है। मंडी में जगह बनाने के लिये कम से कम लागत पर अधिक से अधिक उत्पादन आवश्यक है। सब जगह मजदूरों के लिये इसका मतलब कम वेतन और अधिक वर्क लोड है। इसी सिलसिले में बम्बई की "सीप्झ" एक्सपोर्ट जोन स्थित फैक्ट्रियों में काम करती महिला मजदूरों को हर रोज बारह घन्टे काम के लिये मैनेजमेंटें अठारह-बीस रुपये देती हैं। प्रोविडेन्ट फन्ड और बोनस जैसी चीजें एक्सपोर्ट जोन में नहीं हैं।

बम्बई के "सीप्झ" एक्सपोर्ट जोन स्थित टंडन उद्योग समूह की महिला मजदूरों ने वेतन वृद्धि और अन्य सहुलियतों के लिये आन्दोलन शुरू किया। इस पर मैनेजमेंट ने वरकरों को नौकरी से निकालना शुरू कर दिया। अपने आन्दोलन को एक कदम आगे बढ़ाते हुये टंडन उद्योग समूह की महिला मजदूरों ने मंत्रियों के बंगलों पर जो हमला बोला उसी का जिक्र हमने ऊपर किया है।

(जानकारी 'जागृति ज्वाला' के हवाले से 'जन संग्राम' के जून 94 अंक में संक्षिप्त रिपोर्ट से ली है।)

बाल मजदूरों की जिन्दगी की हकीकत जानने और बाल मजदूरों की समस्याओं से जूझ रहे बच्चों व बालिगों के साथ हम सम्बन्ध स्थापित करना चाहते हैं। कृपया हमसे सम्पर्क करें। नेपाल में इस प्रकार का काम कर रहे लोग नेपाली भाषा में 'बाल सरोकार' और अंग्रेजी में 'वायस ऑफ चाइल्ड वरकर्स' प्रकाशित करते हैं। उनका पता है : CWIN, POST BOX NO. 4374, KATHMANDU, NEPAL

**मजदूरों द्वारा अपने अनुभवों और विचारों को प्रस्तुत करने के लिये लिखे लेखों और रिपोर्टों को हम इस पन्ने पर छापेंगे। ऐसे लेख और रिपोर्ट हमारे लिये खुशी की चीज हैं। अपनी बात हमें लिख कर दें। आपको अपनी बातें छपवाने के लिये कोई पैसे खर्च नहीं करने पड़ेंगे।**

# विक्टोरिया जूट मिल

सन् 1993 का 20-21 अक्टूबर विक्टोरिया जूट मिल के इतिहास में एक अविस्मरणीय दिन के रूप में उभरा। यहाँ भूखे मजदूरों के पेट से जो धधकता ज्वालामुखी फटा, सारे दुनिया के आन्दोलनरत मजदूरों के सामने जीता जागता मिसाल बना। जिससे प्रशासन की नींद हराम होने लगी। मालिकों की तिजोरी हिलने लगी। मैनेजमेंट और दलाल ट्रेड यूनियनों का राज खुलने लगा। मजदूरों की खून-पसीना से बनी और उनके मेहनत पर खड़ी विक्टोरिया जूट मिल तेरह सालों से लॉक आउट और सस्पेन्शनों की गोद में झूलता रहा है। और आज आठ महीनों से बन्द के चपेट से छटपटा रहा है। दुनिया में बहुत से कारखाने बन्द हैं किन्तु विक्टोरिया जूट मिल की कहानी इन सारे मिलों से भिन्न है।

तेरह सालों से विक्टोरिया के मजदूर दलाल ट्रेड यूनियनों के बहकावे में भटक रहे थे। मालिक, मैनेजमेंट, सरकारी दल उनके बिचौलिया दलाल ट्रेड यूनियन मजदूरों का खून-पसीना चूस कर अपने मुनाफे के चक्कर में पड़े हुए थे। उनकी मेहनतों को फाईव स्टार होटलों में खर्च कर रहे थे। उनकी इच्छाओं को लॉक आउट, सस्पेन्शन और छंटनी के कफन से ढक रहे थे। उनके परिवारों को भूख की भट्टी में झोंक रहे थे। उनके नवजात बच्चों को स्कूल की जगह जुगाड में भेजने पर मजबूर कर रहे थे। इन सबका जिम्मेदार था यहाँ का दलाल ट्रेड यूनियन, बेईमान मालिक, नाकाम प्रशासन और घटिया प्रबन्धक। इसका नतीजा ये निकला कि 21 अक्टूबर के दिन मजदूरों के इन्तजार का बांध टूट गया जिससे सारे ट्रेड यूनियनों के आशियाने डूब गये। इस बांध को फिर बनाने के लिए प्रशासन द्वारा पुलिस के माध्यम से मजदूरों पर जुल्म और अत्याचार शुरू हुआ। सैंकड़ों निर्दोष व्यक्ति हवालात में ठूंस दिये गए। पुलिस के भय से यहां के बहुत सारे मजदूर रात में घर छोड़ कर भागने लगे। भिखारी पासवान को यहां से जिन्दा गायब कर दिया गया जो आज तक पहेली बना हुआ है।

मगर यहाँ के मजदूर मौत के साथ लड़ाई लड़तें रहे, हारे नहीं। हर राजनैतिक पार्टी और प्रशासन द्वारा इनके लड़ाई को भंग कर देने का उपाय किया गया। राजनैतिक दांव पेच शुरू हुये। बड़े-बड़े नेताओं का आगमन तेलिनीपाड़ा की धरती पर होने लगा। फिर भी यहां के मजदूर बहुत सारी समस्याओं, धमकी और डर के बावजूद जीने की राह से लड़ाई लड़ने के लिए "प्रोग्रेसिव लेबर एसोसिएशन" में संगठित हुए। पी.एल.पी. का कुछ साथी आकर मजदूरों को मजदूर का कमीटि बनाकर लड़ने का मार्ग दिखाया। उनके बताए रास्ते पर मजदूर संगठित होकर लड़ाई शुरू किया। मिल से लेकर हेड आफिस तक डेपुटेशन देने का सिलसिला शुरू हुआ। मालिक से बातचीत का रास्ता तैयार किए। प्रोग्रेसिव लेबर एसोसिएशन द्वारा फ्री डॉक्टर और दवा का इन्तजाम किया जा रहा है। मजदूरों की समस्याओं का हल ढूंढने का उपाय संगठन द्वारा उठाया जा रहा है। मजदूरों को एकबद्ध तरीका से संगठित होकर लड़ने के लिए प्रयास किया जा रहा है। इस संगठन द्वारा जंगल राज खत्म करके मजदूरों का राज कायम करने का अहम मुद्दा सरकार और मजदूरों के समक्ष रखा जा रहा है।

बेयर्ली के चार कारखानों में सबसे ज्यादा दिनों से विक्टोरिया जूट मिल बन्द है। इसका खुलवाने का प्रयास और वार्ता आज तक नाकाम रहा। कटौती और छंटनी की अफवाहें यहां के मजदूरों पर मंडरा रहीं है। ये न हो इसके लिए प्रोग्रेसिव लेबर एसोसिएशन द्वारा इनके खिलाफ प्रस्ताव मालिक के समक्ष रखा गया है।

विक्टोरिया जूट मिल पर पी. एफ. और ई. एस. आई. का लगभग 7 करोड़ रुपया बकाया है। इसके साथ-साथ मजदूरों का डेढ महीने का वेतन और पाँच वर्षो का बोनस मालिक की तिजोरी में जमा है। फिर भी यहाँ के लड़ाकू मजदूर जीवित हैं। ये किस तरह एक-एक दिन गुजार रहे हैं इसकी कल्पना कर आत्मा तक काँप उठती है। किन्तु यहाँ की सरकार और दलाल ट्रेड यूनियन मिल किस तरह स्थाई रूप से खुले इसका समुचित उपाय नहीं कर पा रहे हैं। इसका परिणाम यह निकला कि यहाँ के मजदूरों का सरकार और ट्रेड यूनियनों पर से विश्वास उठ गया है। इस तरह वे प्रोग्रेसिव लेबर एसोसिएशन के मार्फत अपनी लड़ाई अपने ढंग से लड़ने के लिये एकत्रित हो गए हैं। इस संगठन का दबाव अब मालिक और सरकार पर पड़ने लगा है।

विक्टोरिया के भूखे मजदूरों की अन्तरआत्मा की गूँज राईटर्स की वादियों में गूँज रही है। किन्तु इस गूँज की आहट को सुनने का सरकार के पास वक्त नहीं है। लाचार होकर मजदूर रोजी-रोटी के लिए खुद लड़ाई पर उतर चुके हैं। सरकार की नाकामी विक्टोरिया के अलावा कनोड़िया, आगरपाड़ा तथा बारानगर जूट मिलों में झलकने लगी है।

4.6.94 विक्टोरिया जूट मिल के कुछ मजदूर

## कही-सुनी-देखी

★**"सावधान!** इस गाँव में कोई टैक्स नहीं देगा और कोई सरकारी कर्जा नहीं लौटाया जायेगा। कोई सरकारी अधिकारी गाँव में टैक्स लेने या कर्जा वसूलने आयेगा तो उसे मार कर भगा दिया जायेगा।"- महाराष्ट्र के जलगाँव जिले के एक गाँव में बोर्ड पर नोटिस।

बातचीत में गाँव के लोगों ने कहा, "हमें कोई सरकार नहीं चाहिये। हमें कोई पुलिस नहीं चाहिये। इन पाँच साल में हमारे गाँव में कोई पुलिस केस नहीं हुआ है।"

★**ईस्ट इंडिया पावरलूम** के एक वरकर से सुना, "साल-भर पहले की बात है। राजेश्वरी टैक्सटाइल्स में एक मशीन पर माल बहुत खराब आया था। कपड़े में जगह-जगह जाले आते थे और हम बेहद परेशान थे। एक तो एक्स्ट्रा काम करो और ऊपर से सस्पैन्ड भी हो! माल खराब की शिकायत को मैनेजमेंट ने अनसुना कर दिया था। तब तीनों शिफ्टों के हम तीन वरकरों ने आपस में सलाह-मशविरा की और साँझा कदम उठाया। इससे उस मशीन पर प्रोडक्शन बहुत कम हो गया और तीसरे दिन ही वीविंग मास्टर का हाजिर होने का हमें आदेश मिला। वीविंग मास्टर आग-बबूला था और जब बहुत-कुछ कह चुका तब हमने कहा कि आप कहने की बजाय मशीन पर चल कर देखो। माल इतना खराब है कि अगर चार बाबिन माल सही चलवा दो तो हमें कहना। साहब ने शाम को राउन्ड का वक्त तय करके बात खत्म की। शाम को मशीन पर जब वीविंग मास्टर पहुँचा तब वहाँ का हाल देख कर उसने चुपचाप बीम कटवा दी और हमें उस खराब माल से छुटकारा मिला।"

★**कटलर हैमर** के एक कैजुअल वरकर ने पूछने पर कहा, "फैक्ट्री में बाकी तो सब ठीक है पर कैजुअल वरकरों को ओवरटाइम का सिंगल रेट से पैसा दिया जाता है जबकि परमानेन्ट वरकरों को डबल रेट से पेमेन्ट होती है। कैन्टीन का ठेकेदार भी हेरा-फेरी करता है। कैजुअल वरकरों को बकाया पैसे वह लौटाता ही नहीं। वैसे पेमेन्ट में हमें बहुत परेशानी होती है और तनखा लेने में तीन-चार घन्टे लग जाते हैं।"

★**महिला यात्री** को दिल्ली में कश्मीरी गेट और सराय काले खाँ बस अड्डों पर पेशाब करने के लिये भी एक रूपया देना पड़ता है।

★**सुबह 6 बजे** नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से बाटा फैक्ट्री की एक वरकर गाड़ी पकड़ती है ताकि सवा सात बजे ड्यूटी पर हाजिर हो सैके। नहाने-धोने, खाना बनाने, तैयार हो कर टाइम पर स्टेशन पहुँचने के लिये उस महिला मजदूर को सुबह चार बजे उठना पड़ता है। शाम साढे चार बजे काम से छूट कर वह भाग कर पौने पाँच वाली गाड़ी पकड़ती है। बाटा फैक्ट्री में काम कर रही वह महिला मजदूर छह बजे घर पहुँचती है। इस प्रकार काम के लिये तैयार होने, आने-जाने, काम करने में दिन के 14 घन्टे लग जाते हैं। अगले रोज काम के लिये शरीर को फिट करने के लिये डॉक्टर 8 घन्टे की नीन्द जरूरी बताते हैं। घर-बच्चों को समय देना... उस महिला मजदूर के पास अपने लिये कोई सैकेन्ड बचते हैं क्या? एक रिश्तेदार को नौकरी के लिये सऊदी अरबिया की उड़ान पकड़वा कर सुबह-सुबह फरीदाबाद लौट रहा बाटा फैक्ट्री का एक अन्य मजदूर ट्रेन में बैठा-बैठा इस हिसाब-किताब में उलझा था।

**इस अखबार को हम अधिक संख्या में छपना चाहते हैं ताकि बड़ी तादाद में मजदूर इसे पढ़ें और यह अखबार भी अनुभवों तथा विचारों के आदान-प्रदान के लिये एक मंच बने। रुपये-पैसे की कमी हमारे लिये एक बाधा है। अगर आप इस अखबार को उपयोगी समझते हैं तो कृपया आर्थिक योगदान भी दें।**

# आज्ञापालन-ट्रेनिंग का प्रतिरोध

(न्यूज एन्ड लैटर्स के जनवरी-फरवरी 94 अंक में एक युवती लिन हेले के लेख की सामग्री हम यहाँ प्रस्तुत कर रहे हैं।)

लिन हेले मानती है कि क्रांति समाज को बदल देगी। वह एक मार्क्सवादी संगठन में सक्रिय है। लिन एक समलैंगिक है। एक दिन उसका अपहरण करके उसे एक मेन्टल अस्पताल में बन्द कर दिया गया। शुरू में उसने सोचा कि गलती से उसके साथ यह हुआ है और शीघ्र ही उन्हें इसका अहसास हो जायेगा। लेकिन वे उससे बार-बार कहते रहे कि वह मानसिक तौर पर परेशान है। जल्दी ही लिन को पता चल गया कि उसके विचारों के लिये उसे मेन्टल अस्पताल में बन्द किया गया था।

मेन्टल अस्पताल में स्पेशलिस्टों ने यह सिद्ध करने के लिये कि पूँजीवाद कितना अच्छा है, उसे "एटलस श्रग्ड" किताब पढ़ने को मजबूर किया। विशेषज्ञों ने उसे यह दिखाने के लिये कि वह स्त्री के लिये स्वीकार्य व्यवहार कर सकती है, लिन को स्कर्ट पहनने, मेकअप करने, कभी ही-ही करने तो कभी गुमसुम गुड़िया की तरह व्यवहार करने को प्रोत्साहित किया।

कँटेदार तारों से घिरी, कई तालों वाली किलेनुमा बिल्डिंगों में स्थित मेन्टल अस्पतालों और केन्द्रों में इस समय अमरीका में हजारों युवा-बच्चे बन्द हैं। इनमें बड़ी संख्या ऐसों की है जिन्हें माता-पिता से बहस करने, पढाई में कमजोर होने, भिन्न आदर्श रखने, राजनीतिक सक्रियता जैसे कारणों से माता-पिता ने "स्वे च्छा से" मे न्टल अस्पतालों में बन्द करवाया है। अमरीका सरकार और माता-पिता बच्चों-युवाओं को मेन्टल अस्पतालों में "व्यवहार परिवर्तन" कार्यक्रम के तहत बन्द करते हैं। यहाँ स्पेशलिस्ट इलाज का लक्ष्य उन बच्चों की सोच व व्यवहार को वर्तमान सिस्टम में मान्य साँचे में ढालना है।

मार-पीट, सफेदी पुते छोटे कमरे में रोज 20 घन्टे अकेले बन्द कर देना, नँगा करके तलाशी, पत्र-टेलीफोन-अन्य बन्दियों से बात करने-पढ़ने-टी वी देखने पर रोक और बिजली के झटके लगाना कन्ट्रोल को पुनः स्थापित करने के विशेष उपचार के अंग हैं। भोजन, कपड़े और नीन्द विशेषाधिकार हैं जो उन्हें ही दिये जाते हैं जो बने बनाये साँचे को स्वीकार कर उसके द्वारा निर्धारित अर्थहीन काम करके यह सिद्ध करते हैं कि वे पागल नहीं हैं। कन्ट्रोल को पुख्ता करने के लिये हुकम का पालन करना सिखाने के वास्ते आज्ञापालन की ट्रेनिंग दी जाती है। कई नुस्खों में हर पल का कार्य और प्रत्येक कदम तय होता है।

मेन्टल अस्पताल में बन्द एक 16 वर्षीय लड़की ने लिन से कहा, "अस्पताल का हर हिस्सा मुझ में आजादी और आजाद होने की आशा तक के प्रति बेरूखी-अरूचि पैदा करता है। जिन्दा दफन कर दी गई हूँ के अहसास को दबाने की मैं कोशिश करती हूँ लेकिन धमाके से बन्द होता हर दरवाजा मेरे दिमाग पर ऐसे अहसास की अमिट छाप डालता है।"

घर, स्कूल, पड़ोस, संगी-साथी, खेल, ईश्वर के वचन, रेडियो-टी वी-फिल्म, संस्कार, सफलता-असफलता के माप व पुरस्कार-दण्ड आदि-आदि के जरिये मंडी के नियम-कानून में लोगों को रंगने-ढालने के लिये सम्पूर्ण दुनियाँ आज एक विशाल मेन्टल अस्पताल के समान है। जिन बच्चों-युवाओं को यह विश्व लेबोरेट्री मंडी की अफरा-तफरी-उठा-पटक और मानवभक्षण को स्वीकार करने लायक लिजलिजे नहीं बना पाती उनके विशेष उपचार के लिये, लिजलिजा बनने में आड़े आते उनके प्रतिरोधों को तोड़ने के लिये विशेषज्ञों से युक्त मेन्टल अस्पताल स्थापित किये गये हैं। वैसे, मेन्टल अस्पताल में बन्द बालिगों के उपचार में डॉक्टर रूचि नहीं लेते। कहावत है : कैसा भी बिगड़ा हो, फौज में भर्ती करवा दो दुरूस्त हो जायेगा। लेकिन जो फौज में बिगड़ गया वह कहीं ठीक नहीं होगा.... इसलिये कन्ट्रोल से बाहर बालिगों को विश्व मेन्टल अस्पताल अपनी विशाल आबादी की नजरों से ओझल करने के लिये उन्हें जेलों-मेन्टल अस्पतालों-कब्रों में डाल कर उनके अस्तित्व को मिटाने की जी-तोड़ कोशिश करता है ताकि कन्ट्रोल बना रहे।

मेन्टल अस्पताल से लिन 6 महीने बाद छूटी। वह एक युवा ग्रुप के सम्पर्क में आई जो बच्चों को मेन्टल अस्पतालों में बन्द करने के खिलाफ आवाज उठा रहा था। अपनी आवाज को बुलन्द करने के लिये युवा मन्डली ने एक पत्रिका छापनी शुरू की। तीन महीनों के अन्दर उस पत्रिका के 6 हजार पाठक बन गये। लिन हेले और उसके मित्र ऐसा समाज चाहते हैं जहाँ सबके लिये स्वतंत्रता - आजादी हो।

# जापानी कल्चर

1992 में कामागासाकी जिले में बेघरबार लोगों में से 269 लोग गलियों में खुले में मरे। लोकल पुलिस के मुताबिक दिसम्बर 93 में जिले में 20 हजार मजदूर थे जिनमें से अधिकतर अकेले हैं, पुरूष हैं और हर रोज काम की तलाश में एक जगह जुड़ते हैं। औसतन आधे से भी कम लोगों को काम मिलता है। कई मजदूरों के पास सोने की जगह नहीं है और इन्हें रात बिताने के लिये रोज जगह ढूँढनी पड़ती है, खुले में बितानी पड़ती है।

मंडी की होड़ में बने रहने के लिये कम्पनियों द्वारा बड़े पैमाने पर छँटनी की जा रही है। साथ ही, मंडी की होड़ में बने रहने के लिये जरूरी काम की भारी मात्रा तथा तेज रफ्तार को देखते हुये मैनेजमेंटें नौजवान मजदूरों को ही काम पर रखती हैं। ऐसे में जापान में भी काम की तलाश कर रहे अधेड़ आयु के लोगों की भीड़ बढ़ रही है। साथ ही, जापान में भी ऐसे बूढे लोगों की तादाद में भारी वृद्धि हो रही है जिन्हें नौकरी की जरूरत है।

कामागासाकी जिले में ही फरवरी 94 में एक सहायता केन्द्र को छह हजार बुजुर्गों ने काम दिलाने में मदद के लिये आवेदन दिये। सहायता केन्द्र के महीने-भर के प्रयास के पश्चात 5 बुजुर्गों को कम अवधि की और 14 को दीर्घ अवधि की नौकरियाँ मिल पाई।

(जानकारी हमने 'दी जापान टाइम्स' के 29 मार्च 94 अंक से ली है।)

# कम्प्यूटर संस्कृति

इलेक्ट्रोनिक्स कम्पनियों में मैनेजमेंटें काम की मात्रा और रफ्तार 25 वर्ष की आयु के लोगों के माफिक रखती हैं। वरकरों का ध्यान रखने की शोहरत वाली कम्पनियों में भी वरकरों को दस से सोलह घन्टे रोज काम करना पड़ता है। भारी वर्क लोड, असामान्य समय पर काम करने, लगातार रफ्तार पकड़ रहे तकनीकी परिवर्तनों से कदम मिलाने की आवश्यकता द्वारा थोपी जाती भारी मानसिक मेहनत और मंडी में बढ़ती होड़ द्वारा पैदा दबावों के थपेड़े वरकरों को जल्दी ही काम के लायक नहीं छोड़ते। चालीस वर्ष की आयु से काफी पहले ही बहुत वरकर खुद कम्प्यूटर उद्योग छोड़ देते हैं या उन्हें नौकरी से निकाल दिया जाता है अथवा उन्हें जबरन गौण काम पर लगा दिया जाता है। इस क्षेत्र की कई बड़ी कम्पनियों ने रिटायरमेंट की योजनायें तक नहीं बनाई हैं – रिटायरमेंट की उमर तक उनमें वरकर टिक ही नहीं पाते। एपल कम्प्यूटर, कोमपैक, सन और माइक्रोसोफ्ट कम्पनियों में पेन्शन योजनायें नहीं हैं – एपल का एक चीफ एग्जेक्यूटिव इसे गौरव की बात मानता था। इम्पलाइयों पर अत्याधिक काम के बोझ तथा वरकरों के शीघ्र नाकारा हो जाने की व्यापक समस्या के बारे में कम्पनी क्या कर रही है यह पूछने पर एपल कम्प्यूटर के परसनल एग्जेक्यूटिव ने उत्तर दिया, "हम इसके बारे में कुछ नहीं कर रहे। लोगों से जितना ज्यादा काम हम करवा सकते हैं उतना हम करवाते हैं। जो वरकर नाकारा हो जाते हैं उन्हें नौकरी छोड़नी पड़ती है और हम नये लोगों की भर्ती कर लेते हैं।"

(दी पीपल, 9 अप्रैल 94 के अंक से हमने उपरोक्त सामग्री ली है।)

**इस अखबार के काम में हाथ बँटाने के लिये, अखबार के विस्तार के लिये आप इनमें से कोई एक या कई अथवा सब काम कर सकते हैं :**

**– अखबार की सामग्री पर राय देना।**

**– अखबार में छपने के लिये सामग्री जुटाना।**

**– अखबार बाँटने में हिस्सा लेना।**

**– अखबार पर खर्च के लिये रुपये-पैसे देना।**

# फरीदाबाद में मजदूरों के सामुहिक कदम

**★कैन्टीन वरकर** फरीदाबाद में शायद ही किसी फैक्ट्री में कम्पनी के इम्पलाई हैं। सब जगह मैनेजमेंटों ने ठेकेदारों की आड़ ली हुई है और कैन्टीन वरकरों पर बारह-चौदह घन्टों की ड्यूटी तथा सरकारी न्यूनतम वेतन से एक तिहाई तनखा जैसी चीजें थोपी हुई हैं। मजदूरों के दबावों की वजह से कुछ फैक्ट्रियों में कुछ कैन्टीन वरकर ठेकेदारी प्रथा के ही तहत परमानेन्ट हैं और उन्हें आठ घन्टों की ड्यूटी के लिये सरकारी न्यूनतम वेतन मिलता है। ऐसी फैक्ट्रियों में भी आमतौर पर कैन्टीन वरकरों के साथ खुला भेदभाव बरता जाता है।

झालानी टूल्स मैनेजमेंट ने मजदूरों को अप्रैल की तनखा 18 मई को दी लेकिन कैन्टीन वरकरों को तब भी नहीं दी। 19 मई को कैन्टीन वरकरों ने जब काम बन्द कर दिया तब मैनेजमेंट ने उन्हें तनखा देनी शुरू की पर तब भी परमानेन्ट कैन्टीन वरकरों को ही तनखा देनी चाही और कैजुअल वरकरों को वेतन देने से मना कर दिया। इस पर परमानेन्ट वरकरों ने तनखा लेने से इनकार कर दिया। आखिरकार मैनेजमेंट को कैजुअल और परमानेन्ट कैन्टीन वरकरों को साथ-साथ तनखा देनी पड़ी और यह भी वायदा करना पड़ा कि मई का वेतन उन्हें अन्य मजदूरों के साथ ही दिया जायेगा।

मई की तनखा मैनेजमेंट ने 11 जून को वरकरों को दी पर कैन्टीन वरकरों में थर्ड प्लान्ट के ही वरकरों को वेतन दिया। 12 को सन्डे था। 13 जून को सुबह झालानी टूल्स में कैन्टीन वरकरों ने फस्ट और सैकेन्ड प्लान्टों में काम बन्द कर दिया। कैन्टीन वरकरों द्वारा काम बन्द करने के समाचार ने साढ़े आठ बजते-बजते अन्य मजदूरों में हलचल पैदा कर दी। हो-हल्ला होने पर फस्ट प्लान्ट में वैलफेयर अफसर कैन्टीन पहुँचा। वहाँ कैन्टीन वरकरों ने पिछले वायदे की याद दिलाई और तनखा डिमान्ड की तथा प्लान्ट के अन्य वरकरों ने कहा कि 9 बजे की चाय नहीं मिलेगी तो प्रोडक्शन बन्द कर दिया जायेगा। यह हालात देख कर वैलफेयर अफसर भागा-भागा परसनल अफसर के पास गया और परसनल मैनेजर ने प्लान्ट मैनेजर के पास दौड़ लगाई। फस्ट और सैकेन्ड प्लान्टों के कैन्टीन वरकरों को शाम तक तनखा देने के आश्वासन के बाद ही कैन्टीनों में काम शुरू हुआ और शाम को मजदूरों को वेतन दे दिया गया।

**★हितकारी पोट्रीज** में 13 जून को चाय ब्रेक में एक मजदूर ने कैन्टीन में एक लीडर को चाय दिखा कर कहा, "देखिये, न इसमें दूध है, न पत्ती है और न ढँग से उबली है। लेकिन तुम लीडर लोग तो दूध में पत्ती डलवा कर पीते हो इसलिये तुम्हें इससे क्या कि वरकरों को कैसी चाय मिलती है। अच्छा तो यह होगा कि इस चाय में जहर मिलवा दो ताकि सब वरकर मर जायें और फिर लीडर लोग मौज करना।" इस पर वह लीडर गर्म हो गई और उसने चीफ परसनल मैनेजर को वरकर की शिकायत की। 14 को उस वरकर का रैस्ट था। 15 जून को जब व ड्यूटी पर पहुँचा तो उसे गेट पर रोक दिया गया। और उसे जो सस्पैन्ड-चार्जशीट लैटर दिया उसमें मैनेजमेंट ने एक अन्य लीडर की तरफ से उस वरकर पर आरोप लगाया कि उसने लीडर की पत्नी को छेड़ा था! यह खबर फैलने पर साढे बारह बजे लन्च में वरकर साइकिल स्टैन्ड पर एकत्र होने लगे। मैनेजमेंट ने सैक्यूरिटी स्टाफ की मदद से मजदूरों को तितर-बितर किया।

22 जून को हितकारी पोट्रीज में एक वरकर और सुपरवाइजर के बीच चिक-चिक हुई। इस पर सुपरवाइजर ने आरोप लगाया कि मजदूर शराब के नशे में है। मैनेजमेंट के अन्य लोगों ने जाँच की और सुपरवाइजर के इल्जाम को थोथा पा कर उन्होंने मामले को रफा-दफा कर दिया। 23 को जब वह वरकर ड्यूटी पर पहुँचा तब उसे गेट पर रोक कर सस्पैन्ड लैटर पकड़ा दिया गया। लैटर में मैनेजमेंट ने वरकर से कहा कि उस पर इतना गम्भीर आरोप है कि उसे चार्जशीट पहली जुलाई को दी जायेगी! इस सब के खिलाफ मेन्टेनैन्स डिपार्टमेन्ट के वरकर इक्ट्ठे हो कर प्लान्ट मैनेजर के पास गये।

24 को हितकारी पोट्रीज में एक सुपरवाइजर ने ग्लेजिंग डिपार्टमेंट में एक महिला मजदूर से बदतमीजी की। इस पर ग्लेजिंग के पुरूष एवं महिला, सब वरकरों ने लिख कर मैनेजमेंट को घटना की जानकारी दी। 25 को ग्लेजिंग के सब वरकर इक्ट्ठे हो कर मैनेजमेंट से मिले और सुपरवाइजर के खिलाफ एक्शन की जानकारी माँगी। मैनेजमेंट ने तब कहा कि वह मामले की जाँच कर रही है!

**फैक्ट्रियों में तथा बस्तियों में सामुहिक कदमों की जानकारी को ज्यादा से ज्यादा लोगों तक पहुँचाना हमारे लिये खुशी का काम है। अगर आपके पास ऐसी जानकारी है तो वह हमें दें।**

**★एस्कोर्ट्स रेलवे डिवीजन** (हीरियों प्लान्ट नहीं जैसा की हमने जून अंक में कहा था) में फस्ट प्लान्ट से 24 सैक्टर ट्रान्सफर के वक्त प्राप्त अपने अधिकार को बरकरार रखने के लिये जूझते हुये मजदूरों को 14 जून को एक महीने से ऊपर हो गया था। हर रोज आठ बजे से पहले से वरकर गेट पर रुकते जाते हैं। फैक्ट्री गेट पर साइकिल, स्कूटर, मोटरसाइकिल वाले और पैदल वरकरों की भीड़ लग जाती है। दिल्ली की तरफ से सवा आठ के करीब फैक्ट्री बसों के आने के बाद ही सब वरकर इक्ट्ठे फैक्ट्री में प्रवेश करते हैं।

**★झालानी टूल्स** फस्ट प्लान्ट में प्लेटिंग डिपार्टमेंट 30 मई को सैकेन्ड शिफ्ट में फिर धूँये से भर गई। प्लेटिंग मजदूर इक्ट्ठे हो कर वर्क्स मैनेजर के पास गये। मैनेजर के कमरे के बाहर वरकरों ने चौकीदार तैनात पाया। मजदूरों द्वारा सामुहिक रूप से अपनी समस्यायें मैनेजर को प्रस्तुत करने के बढ़ते मामलों को देख कर मैनेजमेंट ने वर्क्स मैनेजर के कमरे के बाहर गार्ड तैनात किया था और उसे हुकम दिया था कि वह मजदूरों को समूह में मैनेजर के दफ्तर में प्रवेश नहीं करने दे। चौकीदार ने प्लेटिंग मजदूरों से कहा, "साहब से आप लोग इक्ट्ठे नहीं मिल सकते। अपने लीडर को लाओ। लीडर के साथ अपने में से एक वरकर को साहब से मिलने अन्दर भेज सकते हो।" मजदूरों द्वारा समझाने-बुझाने पर भी गार्ड उन्हें इक्ट्ठे दफ्तर में जाने देने को राजी नहीं हो रहा था। यह सब चल रहा था कि साहब का सामान उठाये चपरासी दफ्तर से निकला और उसके पीछे-पीछे साहब भी घर जाने को निकले। मजदूरों ने वर्क्स मैनेजर को घेर लिया और प्लेटिंग डिपार्टमेंट चलने को कहा। साहब वहीं बात करने पर जोर देते रहे पर मजदूरों के अड़े रहने पर उन्हें प्लेटिंग डिपार्ट जाना पड़ा। हार्डिंग डिपार्ट के धूँये से प्लेटिंग डिपार्ट भरी हुई थी। वह धूँआ आँखों में सूइयों की तरह चुभ रहा था और बरबस आँसू निकल पड़ते थे। आँसू भरी आँखें लिये साहब प्लेटिंग से हार्डिंग में गये। वहाँ मजदूरों ने बताया कि ऐसा नहीं करें तो माल सोफ्ट हो जायेगा। वरकरों ने साहब को यह भी बताया कि धूँये को बाहर फेंकने वाले सारे एग्जास्ट फेन या तो खराब पड़े थे या फिर निकाल लिये गये थे। प्लेटिंग और हार्डिंग के मजदूरों ने वर्क्स मैनेजर को याद दिलाया कि एग्जास्ट पंखों का हाल वे कई बार मैनेजमेंट को बता चुके थे। मजदूरों से घिरे वर्क्स मैनेजर ने हालात में परिवर्तन के लिये हार्डिंग में चल रहे उस माल को 6 दिन के लिये रुकवा दिया।

**★नोरदर्न इंडिया आयरन एन्ड स्टील** में 45 दिन की ले आफ के बाद मैनेजमेंट ने क्लोजर का नोटिस दे दिया है। मई माह की ले आफ के पैसे मैनेजमेंट ने 16 जून तक मजदूरों को नहीं दिये थे। **★भारतीया इलेक्ट्रिक स्टील** मैनेजमेंट के क्लोजर प्रस्ताव को हरियाणा सरकार ने अनुमति दे दी है। हाई कोर्ट ने क्लोजर नोटिस पर स्टे दी है।

● 19 जुलाई को सुबह दस बजे, 20 को शाम 5 बजे और 21 जुलाई को रात 8 बजे इस अखबार के जुलाई अंक पर मजदूर लाइब्रेरी, आटोपिन झुग्गी में चर्चा होगी। हर कोई इसमें भाग ले सकता है।

**जो चाहते हैं कि यह अखबार ज्यादा लोग पढ़ें, ऐसे 150 मजदूर अगर हर महीने दस-दस रुपये दें तो इस अखबार की पाँच हजार की जगह दस हजार प्रतियाँ फ्री बँट सकेंगी।**

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक एवं सम्पादक शेर सिंह के लिए जे० के० ऑफसैट दिल्ली से मुद्रित किया। RN 42233 **पोस्टल रजिस्ट्रेशन L/HR/FBD/73**
सौरभ लेजर टाइपसैटर्स, बी – 548 नेहरू ग्राउंड, फरीदाबाद द्वारा टाइपसैट।